दिलों को प्रकाशित कर मनाएं सच्ची दिवाली

–ब्र.कु.निधि, कानपुर

हर वर्ष दिवाली आती है और हम सभी लोग घरों की साफ-सफाई कर पुताई आदि करते हैं, नए-नए कपड़े पहनते हैं तथा मिठाईयाँ आदि बनाते हैं। दीपावली की रात घर-घर में दीप श्रृंखलाएँ जलाकर रोशनी की जाती है व आधी रात्रि में मंत्र-साधना से श्री लक्ष्मी को प्रसन्न कर सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं। लेकिन सालों-साल ऐसा करने के बाद भी हम धन-धान्य,सुख-संपदा,खुशी,शांति,धैर्यता आदि खूबियाँ जीवन से खोते जा रहे हैं। अब सोचने की ज़रूरत है कि क्या यही सही तरीका है दीपावली मनाने का? क्या दिवाली मनाने से हमें सच्ची खुशियाँ ,भय,चिंता ,तनाव,आशंका आदि से मुक्त जीवन मिल रहा है? क्या यही सच्ची दीपों की रात्रि है? कहीं यह 'दिवाली', 'दिवाला' तो नहीं?

दिवाली क्यों मनाते हैं?

कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या को हमारे देश में हर्षोल्लास व उमंग-उत्साह का त्योहार दिवाली हर घर में मनाया जाता है। घरों की व कपड़ों की सफाई करते हैं, दीप जगमगाते हैं, तरह-तरह की विद्युत रोशनी करते हैं, व्यापारी लोग पुराना बहीखाता बंद कर नया खोलते हैं आदि आदि। परंतु क्या आपने कभी सोचा है कि यह सब करने के पीछे क्या रहस्य/वास्तविकता है। इस विषय में अनेक किवदन्तियाँ एवं पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं। एक कथा प्रसंग के अनुसार प्राचीन काल में नरकासुर नामक दैत्य ने सारी दुनिया पर अपना राज्य कर रखा था। उसने सोलह हजार राज कन्याओं को बंदी बना लिया था। श्री कृष्ण ने नरकासुर को मारकर संसार को भय मुक्त किया व सोलह हजार राज-कन्याओं एवं देवतओं को भी बंधन से छुड़ाया। इन सोलह हजार कन्याओं से विवाह कर के रानियाँ बनाया। अत: दिवाली से एक दिन पहले की रात्रि को 'नरक-चतुर्दशी' या 'छोटी दिवाली' मनाई जाती है। नरक अर्थात् बुराईयाँ या कमियाँ जिन्हें दूर

मन मंदिर की सफाई करने की जगह बाह्य (स्थूल) सफाई से ही हम खुश हो जाते हैं। तभी तो लक्ष्मी हमसे रूठ गयी हैं। कमल फूल समान बन कर हम 'कमला', लक्ष्मी को प्राप्त कर सकते हैं।

कर जीवन को सुखमय तथा खुशहाल बनाने से ही सही रूप में दीपावली होगी। दूसरी कहानी के अनुसार 'दैत्य राजा बलि' ने सारी पृथ्वी पर अपना एक छत्र राज्य जमा लिया था। उस समय संसार में अराजकता एवं भय व्याप्त था। राजा बलि ने श्री लक्ष्मी को सभी देवी देवताओं सहित बंदी बना लिया था। उस समय भगवान ने राजा बलि को परास्त कर श्री लक्ष्मी व अन्य देवी-देवताओं को कैद से मुक्त किया। अच्छाई की बुराई पर जीत के उपलक्ष्य में हर साल इसी रात को दीपोत्सव 'दिवाली' मनाते हैं और श्री लक्ष्मी के आने का इंतज़ार करते हैं।

सच्ची दिवाली क्या है?

बाह्य तौर पर तो हम युगों से श्री लक्ष्मी-गणेश का पूजन कर, दीप दान कर, विद्युत झालरों की रोशनी से घर जगमगाकर दीपावली मनाते आए हैं परंतु इस तरह दिवाली मनाते-मनाते तो आज के भौतिक युग में जब महंगाई,भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार इत्यादि का बोल-बाला है, ज़्यादातर लोगों का दिवाला ही निकल रहा है। मनुष्य जीवन से सुख-शांति, प्रफुल्लता, धैर्यता, सम्मान देने की भावना, चैन-सुकून,शुद्धता, संतुष्टता इत्यादि खूबियाँ आज खत्म हो गयी हैं व काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, भय, तनाव, अशांति, चिन्ता प्रतिस्पर्धा आदि अवगुणों ने आत्माओं को जकड़ लिया है। जिस कारण मानव आज नवरात्रि,विजय दशमी,दिवाली, गणेश चतुर्थी जैसे त्योहार मनाकर भी खुश एवं संतुष्ट नहीं है। श्री गणेश तथा श्री लक्ष्मी का आह्वान कर विधि पूर्वक पूजन-वंदन करने पर भी न ही हमारी जिन्दगी में कुछ शुभ/अच्छा हो रहा है और न ही लक्ष्मी आ रही हैं। बल्कि जीवन दिनों दिन कमी-कमज़ोरियों एवं बुराईयों से नर्क बनता जा रहा है। साथ ही विडम्बना यह है कि आत्म-दीप जलाकर -शेष पेज 4 पर

शांतिवन। दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.निर्वैर शिवध्वज लहराकर युवा सायकिल यात्रा का शुभारंभ करते हुए।

दाहोद। जिला कलेक्टर डी.ए.सन्या जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कपिला।

जालन्धर (ग्रीन पार्क)। बी.एस.एफ. के जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.रेखा, ब्र.कु.मीरा समूह चित्र में।

दिल्ली (विकासपुरी)। ट्रैफिक पुलिस ट्रेनिंग इंचार्ज सीमा शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सतीश। साथ हैं ट्रेफिक पुलिस डिप्टी कमिश्नर ए.के.सिंह।

उमरेज-कन्नौज। एस.ओ.कृष्णदेव यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरोज।

नगर-भरतपुर। राम रथयात्रा मेले में आध्यात्मिक झांकी को प्रथम स्थान मिलने का सर्टिफिकेट ब्र.कु.हीरा को देते हुए उपखण्ड अधिकारी शौकत अली तथा रमन लाल सैनी।

अनुभव

भविष्य में ताकत किसके पास ?

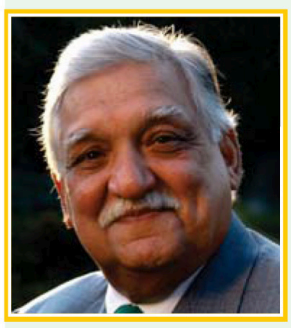

निजार जुमा, नैरोबी के एक व्यवसायी एवं उद्योगपति हैं। आपका जन्म युगांडा में हुआ था। आपने वेल्स, कार्डिफ के विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र, कानून एवं लेखन में संयुक्त डिग्री प्राप्त की है। आप ''द फ्यूचर ऑफ पावर'' कार्यक्रम के सृजक व मेजबान हैं एवं ब्रह्माकुमारीज़ से पिछले 20 वर्षों से जुड़े हुए हैं। आप 51 कंपनियों के निदेशक बोर्ड के अध्यक्ष भी हैं जिनमें से एक एडिडास (अंतर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स ब्रांड) भी है जो अफ्रीका महाद्वीप के 49 देशों में खेल सम्बन्धी उपकरणों का निर्माण करती है। आप कसेना इंटरनेशनल लिमिटेड तथा ऑर्बिट स्पोर्ट्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और केन्या के डायमंड ट्रस्ट बैंक के निदेशक भी हैं। आप विश्व व्यापार अकादमी के सृजक व अफ्रीका देश में इसके उपाध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं। रशिया के पूर्व उपराष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव के नेतृत्व में आपने ''द स्टेट ऑफ वर्ल्ड फोरम'' में अपना योगदान दिया। पिछले 27 वर्षों से आप ''दि आगा खान विकास नेटवर्क'' में स्वैच्छिक क्षमता से निदेशक बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में कार्य भार संभाल रहे हैं। इस नेटवर्क के अनेक विकास सम्बन्धित क्षेत्रों जैसे ऊर्जा उत्पादन, कृषि, फार्मास्युटिकल्स, बैंकिंग, होटल्स, इंश्योरेन्स, प्रॉपर्टी डेवलॉपमेंट आदि में की जा रही गतिविधियों में आपने योगदान दिया है। राष्ट्र को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने के सन्दर्भ में केन्या के राष्ट्रपति ने आपको ''द सिल्वर स्टार अवार्ड'' से सम्मानित किया है। ''द फ्यूचर ऑफ पावर'' कार्यक्रम की मूल मान्यता क्या है, इसका लक्ष्य क्या है, प्रस्तुत है इसकी विस्तृत जानकारी उन्हीं के शब्दों में -

सृष्टि के आदिकाल के 2500 वर्षों तक (सतयुग और त्रेतायुग में) भारत विश्व-शक्ति था। बहुतों को इस बात का सही-सही ज्ञान नहीं है परन्तु इतना सभी जानते हैं कि भारत विश्व-गुरु रहा है। उसके बाद यह शक्ति भारत से चीन, मिश्र, स्पेन, रोम, यूनान आदि देशों में चली गई। वर्तमान समय यह शक्ति अमेरिका और ब्रिटेन के पास है। जब यह शक्ति भारत में थी तो यह आत्मा की शक्ति (सॉफ्ट पावर) थी। इसका अर्थ यह है कि भारत के वो बादशाह पवित्र और सच्चे थे। उन्हें अपनी प्रजा से बहुत प्यार था। वे स्नेह से राज्य चलाते थे, किसी भी प्रकार की ज़बरदस्ती से नहीं।

जब यह शक्ति भारत से बाहर गई तो यह बाहुबल बनने लगी। आज इस शक्ति की परिभाषा इस प्रकार दी जा रही है कि हमारे पास कितनी मिसाइल्स और बम आदि हैं और कितना आर्थिक बल है। सन् 2007 के बाद आप देख रहे हैं कि दुनिया में आर्थिक मन्दी बढ़ती जा रही है। यूरोप के हर देश का जी.डी.पी. नीचे उतर रहा है। मृत्युदर बहुत बढ़ती जा रही है। अब ये देश इसका कारण और निवारण खोज रहे हैं। अमेरिका की भी यही समस्या है। दिखाई दे रहा है कि यह शक्ति वापस पूर्व की ओर लौट रही है। चीन का जी.डी.पी.7 से 9 तक है, भारत का 6 से 8 तक है। हमें श्रद्धा और विश्वास है कि यह शक्ति भारत वापस आती जा रही है।

हम अपने से सवाल पूछते हैं, जब यह शक्ति भारत में आ रही है तो क्या हम इसे पुन: आत्म शक्ति बना सकते हैं। भारत में अहिंसा का दर्शन लम्बे समय से मान्य रहा है। आज भी जितनी आध्यात्मिकता भारत में है, इतनी और किसी देश में नहीं है। फ्यूचर ऑफ पावर कार्यक्रम में हम अलग-अलग प्रकार के 40 से भी अधिक व्यवसायों से जुड़े लोगों को एकत्रित करके डायलॉग करते हैं। इसमें हम विचार विमर्श करते हैं कि सॉफ्ट पावर हमें चाहिए या नहीं और यदि चाहिए तो इसे हम कैसे वापस लाएँ। इसमें राजनीतिज्ञ, व्यापारी, डॉक्टर्स, कलाकार आदि सभी क्षेत्रों से जुड़े लोग शामिल होते हैं।

अब तक भारत के 19 बड़े शहरों में ये कार्यक्रम हो चुके हैं। अगले वर्ष और 13 शहरों में इसे आयोजित करने का लक्ष्य है। इसके बाद इसमें भाग लेने वालों का एक राष्ट्रीय डायलॉग आयोजित करने का भी विचार है जिसमें सब खुले दिल से बताएँ कि भविष्य में सॉफ्ट पावर को भारत में लाने के लिए क्या तरीका अपनाएँ। अनुभव कहता है कि सबसे प्रभावी तरीका यह है कि हम रोजाना की दिनचर्या में आध्यात्मिकता को अपनाएँ, इसे अपनाना बड़ा सरल है। यदि हम यह निर्णय कर लें कि हमें किसी को दु:ख नहीं देना है, यही तो आध्यात्मिकता है परन्तु ऐसा -शेष पेज 11 पर